उपसंहार

उपसंहार

'बहुचर्चित ग्रामजीवन के चितेरे', 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी', 'उपन्याससम्राट', 'श्रेष्ठ कहानीकार' अन्य उपाधियों से सन्मानित प्रेमचंद को समाज में प्रतिष्ठा रही है। उसके साथ ही वे 'नाटककार' भी रहे है। प्रेमचंद कथासाहित्य में उपन्यासकार एवं कहानीकार के रूप में जाने पहचाने जाते हैं, लेकिन नाटककार के रूप में कम लोग ही उनको जानते पहचानते थे। इस कमी को दूर करने के लिए मैंने अनुसंधान के जरिए इस विषय को चुना है। उन्होंने जितना उपन्यास और कहानी में अपना नाम रोशन किया है। उतना उनका नाम नाटक में भी आना चाहिए। इसलिए मैंने अनुसंधान का प्रयास किया है। साहित्य में उन्होंने समाज में उच्चवर्ग, मध्य-निम्नवर्ग जीवन तथा नारी जीवन प्रस्तुत किया है। उसीतरह उन्होंने नाटकों में भी किया है।

प्रेमचंद हिंदी के सर्वोत्तम साहित्यकार रहे हैं और अपने साहित्य में उन्होंने सभ्यसमाज, ग्रामजीवन, किसान - मजदूर वर्ग और अन्य समाज में उद्‌भव समस्याओं को कम करने का प्रयास किया है। इसमें वे सफल रहे हैं।

आलोच्य अध्ययन ते लिए मैंने प्रेमचंद के नाटक 'संग्राम', 'कर्बला' को चून लिया है। 'संग्राम' सामाजिक नाटक है। इसमें उन्होंने जमींदार एवं मध्य-निम्न वर्ग किसानों की कथा का चित्रण किया है और उनका होनेवाला शोषण स्पष्ट किया है। 'कर्बला' ऐतिहासिक, धार्मिक एवं मुस्लिम समाज से जुड़ी कथा है। इसमें मुस्लिम समाज में चित्रित समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद समाज और मानवी जीवन संबंध को चित्रित करनेवाले हिंदी साहित्य जगत में अपनी कृतियों, रचनाओं से अमर होनेवाले, साहित्यकारों में से एक है। ग्रामजीवन से जुड़े अपनी जीवनानुभूति को वाणी देनेवाले, समाज को नयी दिशा दिखानेवाले आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी साहित्यकार प्रेमचंद ने किसान, विधवा, दलित, मध्य-निम्न वर्ग की मानसिकता को चित्रित किया। उन्हीं के कारण साहित्य झुग्गी झोपड़ी तक पहुँचा है।

उनका व्यक्तित्व बहुआयामी रहा है। सच्चा साहित्यकार होने के कारण अपने जीवन को ही साहित्य का विषय बनाया है। 'आप बीती को जग बीत मानकर' इसे शब्दबद्‌ध किया। अर्थाभाव, भूख, गरीबी, अपमान, सौतेली माँ का व्यवहार, बचपन में माता-पिता का छाया न मिलना, नौकरी के लिए दर-दर भटकना, छोटी उम्र में विवाह होना परंतु पत्नी से सुख की अपेक्षा दुःख ही प्राप्त होना। इस विवाह का असफल होना आदि उनकी जीवनी की प्रमुख घटनाएँ हैं। गांधीजी के सिद्‌धांत को अपनाकर उसे साहित्य में उतारनेवाले कलम के सिपाही प्रेमचंद रहे है।

उनका साहित्य अधिक मात्रा में ग्रामजीवन का प्रतीक है। 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हिंदी साहित्य में मील का पत्थर रही है। अंग्रेजी की आलोचना करनेवाले, उसका कल भोगनेवाले गांधीभक्त प्रेमचंद है। मन का साहित्यकार, सच्चा कथाकार, आदर्श का प्रतिपादक प्रेमचंद रहे हैं।

आदर्श ग्राम की संकल्पना, देशभक्ति का प्रसार, दलितों की व्यथा का प्रकटीकरण, अंग्रेजों की कुटिलनीति को दर्शाना सामाजिक रूढ़ी परंपरा से शोषित नारी, दलितो की कहानी बताना, विदेशी को त्यागकर स्वदेशी का प्रसार करना हिंदू-मुस्लिम एकता, मानवता का प्रचार, नारी शिक्षा एवं नारी मुक्ति पर बल देना, अंधश्रद्धा का विरोध करना, औद्योगिकरण को ठुकराना आदि कई उद्देश्यों को लेकर साहित्य लिखनेवाले प्रेमचंद आज के सर्वश्रेष्ट साहित्यकार है। सौ साल पहले की गयी रचना आज भी जनप्रिय वास्तविक यथार्थ लगती है, इसमें प्रेमचंद का महत्त्व छिपा है। एक सर्वश्रेष्ठ, सर्वग्राम, सर्व स्वीकृत, हिंदी के साहित्यकार प्रेमचंद है।

प्रेमचंद ने मुख्यतः साहित्यिक दृष्टि से नाटक लिखे हैं। फिर भी उनके नाटकों में दृश्य एवं संवाद है और संवादो के बीच-बीच में गीत लिखे है। क्योंकि रंगमंच के दृष्टि से नाटक विरल है और निर्देशक जब नाटक को मंचपर प्रस्तुत करता है तो प्रेक्षक ऊब न जा सके, इस बात को ध्यान में रखकर संवादो के बीच-बीच में गीतों का प्रयोग करता है।

प्रेमचंद के नाटक ग्राम-स्थल से संबंधित होने से उनमें किसान, मजदूरवर्ग, जमींदार, साहुकारों की कथा रही है। निर्देशक इस नाटक को मंचस्थ करने के लिए मंचपर मधुबन गाँव का दृश्य होना, गाँव में स्थित वस्तुओं को दिखाना अनिवार्य है। बीच-बीच में गीतों का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। 'कर्बला' में खिलाफत पद से कर्बला के मैदान में युद्ध होता है। युद्ध का वातावरण मंचपर निर्माण करना होगा और घोड़ों की आवाज, तलवारों की आवाज, तोपों की आवाज, बंदूक की आवाज, ऊँट, सेना, सिपाही आदि दृश्य दिखाने चाहिए।

दोनों ही नाटकों में गीत, ध्वनि का प्रयोग है। सिर्फ इतना फर्क है कि, 'संग्राम' ग्रामीण जीवनपर आधारित सामाजिक नाटक है और 'कर्बला' ऐतिहासिक, धार्मिक एवं मुस्लिम समाज से जुड़ी कथा है। मक्का, मदीना यह तीर्थस्थान है। हज करने या पापो का प्रायश्चित करने के लिए लोग जाते है।

अंत में युद्ध का माहौल निर्माण करने के लिए ध्वनियों का इस्तेमाल किया जाता है। ध्वनि से ही युद्ध में होनेवाले कोलाहल निर्माण कर सकते है। 'कर्बला' नाटक में राजभवन एवं दरबारी लोग है। खिलाफत पद पर यजीद बैठता है और हजरत हुसैन भी है। इन दोनों का संभाषन मंचपर प्रस्तुत किया जाता है और 'संग्राम' ग्रामीण जीवन से जुड़ी कथा है। इसलिए इस नाटक में किसान-मजदूर एवं जमींदार,

साहुकार, इन्स्पेक्टर, सिपाही, चपरासी तथा चेतनदास इन सभी पात्रों की बोलियाँ में ध्वनि से ही सजगता आयी है। चेतनदास के मंत्रोच्चरण ध्वनि से निर्माण की है। संगीत या ध्वनि से हिंसा तथा भय का आभास करके वातावरण निर्मित में तथा नाटक को सहायक बनाने में उपयोगसिद्ध हुई है।

नाटक कोई भी हो। संगीत एवं ध्वनि उसकी आत्मा होती है। बिना संगीत एवं ध्वनि से नाटक सफल नहीं बन सकता। नाटक सफल बनाने के लिए संगीत का होना अत्यंत जरूरी होता है। ध्वनि एवं संगीत संयोजन से नाटक सफल रहे हैं।

नाटक और अभिनय का संबंध चोलीदामन जैसा है। मनुष्य बिना शरीर एवं अवयवों से नहीं होता वैसे ही नाटक बिना अभिनय से नहीं होता है। नाटक का मुख्य अंग अभिनय होता है। अभिनय में संवाद होते है। यह संवाद छोटे भी न हो और बड़े भी न हो क्योंकि इससे दर्शकवर्ग ऊब न जा सके लेकिन प्रेमचंद के नाटकों में संवाद बड़े है लेकिन बोझील संवाद नहीं है। उन्होने संवाद निर्माण करते समय मुख्यपात्र और गौणपात्र में संवाद समान रखे है। संवाद से ही अभिनय में रौनक आती है। इसलिए पहले निर्देशक को संवाद पर ध्यान देना चाहिए संवाद से ही नाटक सफल बनता है और अभिनय का उद्देश्य संवाद ही होता है।

अभिनय में - अंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक आदि प्रकार है। अंगिक अभिनय में अंग संचालन द्वारा भाव व्यक्त किए जाते है। वाचिक अभिनय में स्वर, काकु, शब्द आदि के द्वारा भाव और अर्थ व्यक्त करते है। आहार्य अभिनय तथा सात्विक अभिनय में हास्य, आँसू, पसीना आदि सात्विक भावों को दिखाया जाता है। प्रेमचंद के नाटकों में अभिनय के चारों प्रकारों को पूर्ण न्याय मिला है। किंतु प्रेमचंद के नाटकों में वाचिक अभिनय, आहार्य अभिनय, सात्विक अभिनय का आधिक्य दिखाई देता है। वाचिक अभिनय में संवादों को ज्यादा महत्त्व होता है अपितु प्रेमचंद के नाटकों में संवाद तेज तर्रार है। इसलिए वाचिक अभिनय का आधिक्य मात्रा में दिखाई देता है। चारों प्रकारों के अभिनय के दृष्टि से प्रेमचंद के नाटक आसान और सफल रहे है।

नाटककार जब नाटक लिखता है तो उनके सामने पूरा रंगमंच रहता है तथा आजतक जितने भी नाटक लिखे गए वे सभी मंचस्थ करना इसी उद्देश्य को लेकर लिखे है। मंचीयता को ध्यान में रखते हुए प्रेमचंद ने मंचपर कम-से-कम काम चालाऊ दृश्य, नाममात्र के लिए प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि का भरपूर प्रयोग करते हुए अभिनय का भांडार खोल दिया है। उनके नाटक मंचीयता की दृष्टि से विरल है। लेखक स्वयं एक साहित्यकार होने से उनकी इच्छा है कि उनके नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल बने।

लगता है उनकी यह इच्छा पूरी हो गयी है। संग्राम, कर्बला आज भी पाठनीय, प्रेक्षणीय रचना है। सामाजिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक समस्याओं को उजागर करनेवाली यह रचना श्रेष्ठ है। अतः उपन्यासकार

प्रेमचंद के साथ 'सफल नाटककार - प्रेमचंद' कहना उचित होगा। अभिनय के अंतर्गत अभिनय का अर्थ स्वरूप, प्रकार नाटक में अभिनय का विकास प्रेमचंद के नाटकों में अभिनय के विविध आयाम, भाषा, संवाद, प्रकाश योजना, वेशभूषा, ध्वनि आदि पर विचार किया है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद 'उपन्यास सम्राट' के नाते विख्यात है। आज उनका 'नाटककार' के रूप में अनोखा रूप सामने लाने का प्रयास हुआ है। नाटक की आत्मा अभिनय है। अभिनय एक दृश्यरूपी नट का प्रधानतत्व नाटक की अनिवार्य प्रधान अंग है। नाटक में जो दृश्य शब्दबद्ध हुआ है, उसे दर्शकों के सामने लाना प्रस्तुत काव्यपर सादर करना अभिरूप है। यह कार्य पात्र करते हैं। अभिनेता नाटक तथा अवयवों की सहायता से निर्देशक को यह कार्य करना होता है। नाटककार अपने विचार शब्दबद्ध करता है। उन्हीं विचारों को दर्शकों के सामने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य अभिनय करता है।

अभिनय और रंगमंच का संबंध है। प्रेमचंद के नाटकों में रंगमंच ग्रामीण परिवेश से हुआ है। कथानक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से संबंधित है। 'संग्राम', 'कर्बला' का वातावरण मंचीय बना है। रंगमंच पर अभिनय के सभी प्रकार यथार्थ बने है। पात्रों की भाषा संवाद कथोपकथन अभिनयानुकूल, सरल, स्पष्ट, वास्तविक है। एक कथानक की समाप्ति के पश्चात् तुरंत दूसरा कथानक दिखाया जाता है। घटनाक्रम में एक विशिष्ट सृजण बनी रही है। नाटक दृश्यकाव्य होने के कारण पात्रों की वेशभूषा एक अनिवार्य तत्व है। ऐतिहासिक नाटक का यह प्राणतत्व है। 'कर्बला' ऐतिहासिक नाटक है। प्रेमचंद ने इसकी ओर ध्यान दिया है। जिस स्तर के पात्र है उसी के अनुकूल पेहराव बनाया है। स्थल, काल, देश के अनुकूल इसका निर्माण किया है।

मंचियता के कारण संवाद के दृश्य, गीत, संगीत का प्रयोग होना जरूरी है। प्रेमचंद उर्दू के साहित्यकार एवं जानकार है। प्रस्तुत नाटको में उर्दू शब्दों को, गजलों को अपनाया है। इसी के कारण भावप्रवणता गहराई व्यापक बनी है। प्रकाश योजना अभिनेयता के लिए अनिवार्य है। घटना जिस समय घटित होती है। उसी के अनुसार मंच का होना जरूरी है। प्रभात, मध्यान, रात, बरसात, धूप, पतझड़ जो भी हो, उसी के अनुसार प्रकाशयोजना बनाने में रंगमंच वास्तविक बनता है। प्रेमचंद के नाटको में इस पर ध्यान देना जरूरी है। अर्थात् यह सभी निर्देशक पर निर्भर होता है। अंत प्रेमचंद के आलोच्य नाटक अभिनेयता की दृष्टि से सफल है। अभिनेयता के सभी तत्वों का पालन हुआ है। प्रेमचंद के सभी नाटकों का मंचिकरण हुआ है। इसीकारण अभिनेयता नाटक का प्राणतत्व होते हुए भी इसकी ओर प्रेमचंद का ध्यान रहा है।

प्रेमचंद के 'संग्राम' और 'कर्बला' को समकालीन एवं तत्कालीन दृष्टि से देखना जरूरी है। 'संग्राम' में जमींदार और किसानों की पारस्परिक एवं भाई-भाईयों के बीच में संघर्ष का चित्रण किया है।

लगान एवं स्त्री के वजह से जमींदार एवं किसानों में संघर्ष होता है। किसानों का शोषण किया जाता है। जमींदारों की असलियत से किसान लोग जागृत होते है और उनसे संघर्ष करके अपने ऊपर हुए शोषण कम करने का प्रयास करते है। जमींदारवर्ग की नारीलोलुपता तथा नारीप्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

समाज में किसानों की गरीबी, बेबसी और उनकी गुलामी तथा समाज में फैले अंधविश्वास, जातीयता, धार्मिकता और किसानों का मानसिक रूप साधुओं की पाखंडीवृत्ति को दर्शाया है।

कर्बला में सांप्रदायिक वैमनस्य एवं सद्भाव, हुसैन की ईमान के प्रति बेहद आस्था और सत्-असत् के लिए संघर्ष तथा यजीद का क्रूरवृत्ति और अन्याय, अत्याचार फैलानेवाला यजीद का रूप दिखाया है। अंत में मजहब ईमान, सत्-असत् खिलाफत का पद एवं बैयत नामंजूर करने से हुसैन और यजीद के बीच संघर्ष होता है।

संग्राम और कर्बला में समकालीन प्रासंगिक में किसानों की संघर्षवृत्ति, शोषण, आर्थिक दशा और दिशा, नारी का शोषण, विद्रोहीरूप साथ ही सामाजिक चेतना, मुस्लिम संस्कृति में मुस्लिम समाज का चित्रण, हुसैन और यजीद के रूप में दिखाया है। विद्रोहीवृत्ति और सामजस्यपणा, एकता का उल्लेख आदि सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया है।

संग्राम और कर्बला में चित्रित समस्याएँ आज भी महत्त्वपूर्ण है। संग्राम में प्रेम का संदेश है। प्रेम वह शक्ति है जो समस्त समस्याओं का एवं संघर्षो का समाधान है। इस दृष्टि से प्रेमचंद द्वारा रचित 'संग्राम' और 'कर्बला' नाटक सर्वोत्तम कृति है। जो सर्वकालिक प्रासंगिक है। अतः प्रेमचंद एक सफल नाटककार है। यह कहना सही लगता है।